Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July 2024 5(7), 859–866

STUDYING THE ROLE OF SOCIAL MEDIA IN ADDRESSING MISINFORMATION, CYBERBULLYING AND PRIVACY VIOLATIONS

भ्रामक सूचनाओं, साइबरबुलिंग और गोपनीयता उल्लंघनों को संबोधित करने में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्यन

Radha Singh [1], Mili Singh [2]

[1] Research Scholar, Shri Raamshwroop Memorial University
[2] Assistant Professor, Shri Raamshwroop Memorial University

Corresponding Author
Radha Singh, ns1492219@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.4585

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: This study examines the role of social media platforms in addressing misinformation, cyberbullying and privacy violations. As online platforms become increasingly integrated into modern culture, the prevalence of these malpractices has increased, causing potential harm to individuals and broader social structures. The paper employs data analysis techniques, including content and thematic analysis of qualitative data as well as both descriptive and inferential measures. The results aim to provide a comprehensive understanding of the social impact of misinformation on social media and the efficacy of virtual platforms in addressing these issues. This research aims to provide valuable insights into the consequences of misconduct on virtual platforms, exploring their potential in reducing lies, cyberbullying and privacy violations. By identifying effective strategies, the study aims to inform policy and practice, contributing to the development of a safer and more responsible virtual environment.

Hindi: यह अध्ययन भ्रामक सूचनाओं, साइबरबुलिंग और गोपनीयता उल्लंघनों को रोकने में सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की भूमिका का अध्यन करता है। जैसे-जैसे ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म आधुनिक संस्कृति में तेजी से समाहित होते जा रहे हैं, इन अनाचारों का प्रचलन बढ़ गया है, जिससे व्यक्तियों और व्यापक सामाजिक संरचनाओं को संभावित नुकसान हो रहा है। यह पेपर विश्लेषण डेटा विश्लेषण तकनीकों को नियोजित करता है, जिसमें गुणात्मक डेटा की सामग्री और विषयगत विश्लेषण के साथ-साथ वर्णनात्मक और अनुमानात्मक दोनों उपाय शामिल हैं। परिणामों का उद्देश्य सोशल मीडिया पर हो रहे गलत कामो के सामाजिक प्रभाव और इन मुद्दों को संबोधित करने में आभासी प्लेटफार्मों की प्रभावकारिता की व्यापक समझ प्रस्तुत करना है। इस शोध का उद्देश्य आभासी प्लेटफार्मों पर कदाचार के परिणामों के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करना, झूठ, साइबरबुलिंग और गोपनीयता उल्लंघनों को कम करने में उनकी क्षमता की खोज करना है। प्रभावी रणनीतियों की पहचान करके, अध्ययन का उद्देश्य नीति और अभ्यास को सूचित करना है, जो एक सुरक्षित और अधिक जिम्मेदार आभासी वातावरण के विकास में योगदान देता है।

Keywords: Misconduct, Social Media, Trolls, Misinformation, Cyberbullying, Privacy
कदाचार, सोशल मीडिया, ट्रोल, गलत सूचना, साइबरबुलिंग, गोपनीयता।

1. प्रस्तावना

आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों के आगमन ने वैश्विक संचार में क्रांति ला दी है, जिससे व्यक्ति अभूतपूर्व पैमाने पर जानकारी, राय और विचार साझा करने में सक्षम हो गए हैं। हालाँकि ये प्लेटफ़ॉर्म कई लाभ प्रदान करते हैं, जैसे बढ़ी हुई कनेक्टिविटी और सामाजिक और आर्थिक प्रगति के अवसर, लेकिन ये नई चुनौतियाँ और जोखिम भी पेश करते हैं। एक प्रमुख चुनौती आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर कदाचार की व्यापकता है, जिसमें गलत सूचना का प्रसार, साइबरबुलिंग की घटनाएं और उपयोगकर्ता की गोपनीयता का उल्लंघन शामिल है।

1) सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और समाज पर उनके प्रभाव का अवलोकन:

वर्चुअल मनोरंजन प्लेटफ़ॉर्म, जैसा कि केम्प (2021) ने बताया है, आधुनिक संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन गए हैं, जनवरी 2021 तक दुनिया भर में 4.2 बिलियन से अधिक सक्रिय उपयोगकर्ता हैं। इन प्लेटफार्मों ने संचार, इंटरैक्शन और सूचना उपभोग की गतिशीलता को मौलिक रूप से बदल दिया है, जिससे सुविधा हो रही है भौगोलिक और सामाजिक सीमाओं से परे वैश्विक संबंध। इसके अतिरिक्त, ये प्लेटफ़ॉर्म व्यवसायों और संगठनों के लिए अपने उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए मूल्यवान उपकरण के रूप में काम करते हैं, जो आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियों को आकार देने में ऑनलाइन मनोरंजन की भूमिका के बारे में प्रासंगिक सवाल उठाते हैं।

2) भ्रामक सूचना:

गलत सूचना का प्रसार, लेज़र एट अल द्वारा परिभाषित। (2018) जानबूझकर या अनजाने में भ्रामक या गलत जानकारी फैलाना सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक महत्वपूर्ण चुनौती है। गलत सूचना के परिणाम व्यक्तिगत क्षति से लेकर व्यापक सामाजिक प्रभावों तक होते हैं। उदाहरण के लिए, COVID-19 महामारी के दौरान, वांग एट अल। (2020) ने इस बात पर प्रकाश डाला कि वायरस और इसके उपचार के बारे में गलत जानकारी से भ्रम और अविश्वास पैदा हुआ, जिससे वायरस के प्रसार को नियंत्रित करने के सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयासों में बाधा उत्पन्न हुई।

3) साइबरबुलिंग:

टोकुनागा (2010) द्वारा परिभाषित साइबरबुलिंग में दूसरों को परेशान करने या डराने-धमकाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक संचार का उपयोग करना शामिल है। यह गंभीर मुद्दा विभिन्न रूप लेता है, जिसमें उत्पीड़न, ट्रैकिंग और अफवाहों और झूठी सूचनाओं का प्रसार शामिल है। पीड़ितों के लिए परिणाम गंभीर हो सकते हैं, जिससे मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं, आत्मसम्मान में कमी और यहां तक कि आत्महत्या भी हो सकती है। लिविंगस्टोन और डेविडसन (2017) का तर्क है कि सोशल मीडिया प्लेटफार्मों को साइबरबुलिंग से निपटने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा है, कुछ लोगों का कहना है कि वे उपयोगकर्ताओं को उत्पीड़न और दुर्व्यवहार से बचाने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं कर रहे हैं। कई प्लेटफार्मों ने साइबरबुलिंग को संबोधित करने के लिए रिपोर्टिंग तंत्र जैसे नीतियों और उपकरणों को लागू किया है।

4) गोपनीयता का उल्लंघन:

गोपनीयता का उल्लंघन, ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों से जुड़ी एक महत्वपूर्ण चिंता, तब होती है जब किसी व्यक्ति की जानकारी या सहमति के बिना व्यक्तिगत जानकारी साझा की जाती है। ये प्लेटफ़ॉर्म लक्षित विज्ञापन और सामग्री वैयक्तिकरण जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए स्थान, रुचियों और ब्राउज़िंग इतिहास सहित उपयोगकर्ताओं पर व्यापक डेटा एकत्र करते हैं। हालाँकि, जब यह जानकारी उपयोगकर्ता की सहमति के बिना साझा की जाती है, तो इससे गोपनीयता का गंभीर उल्लंघन हो सकता है।

5) सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की भूमिका की जांच:

ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों पर कदाचार से उत्पन्न विकट चुनौतियों को देखते हुए, इन मुद्दों को कम करने में ये प्लेटफार्म क्या भूमिका निभा सकते हैं, इसका मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है। प्लेटफ़ॉर्म ने गलत सूचना, साइबरबुलिंग और गोपनीयता उल्लंघनों को संबोधित करने के लिए विविध रणनीतियाँ लागू की हैं। इन उपायों में हानिकारक सामग्री की पहचान करने और उसे हटाने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग, उपयोगकर्ताओं के लिए दुर्व्यवहार और उत्पीड़न की रिपोर्ट करने के लिए रिपोर्टिंग तंत्र का कार्यान्वयन और उपयोगकर्ता डेटा की सुरक्षा के लिए गोपनीयता नीतियों और उपकरणों को अपनाना शामिल है।

इस अध्ययन का उद्देश्य समाज पर सोशल मीडिया के कदाचारों के प्रभाव और इन चुनौतियों से निपटने में आभासी प्लेटफार्मों की प्रभावशीलता की सूक्ष्म समझ में योगदान करना है। सफल रणनीतियों की पहचान और विश्लेषण करके, यह शोध एक सुरक्षित और अधिक जिम्मेदार आभासी मनोरंजन परिदृश्य के विकास को बढ़ावा देते हुए नीति और अभ्यास दोनों को सूचित करना चाहता है।

1.1. अध्ययन के उद्देश्य

1) जांच करें कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर झूठी जानकारी समाज को कैसे प्रभावित करती है, धोखे के सामान्य रूपों और स्रोतों की पहचान करें।

2) ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर साइबरबुलिंग की व्यापकता और प्रभाव की जांच करें और नीतियों, उपकरणों और उपयोगकर्ता शिक्षा के माध्यम से साइबरबुलिंग को कम करने में इन प्लेटफ़ॉर्म की भूमिका का आकलन करें।

3) ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म की गोपनीयता नीतियों और प्रथाओं की जांच करें, उपयोगकर्ता डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता उल्लंघनों को रोकने में इन उपायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें। इसके अतिरिक्त, उपयोगकर्ताओं को उनके गोपनीयता अधिकारों के बारे में शिक्षित करने और प्लेटफ़ॉर्म के जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म की भूमिका का पता लगाएं।

साहित्य की समीक्षा

आभासी मनोरंजन प्लेटफ़ॉर्म और समाज: आभासी मनोरंजन प्लेटफ़ॉर्म आधुनिक संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन गए हैं, विश्व स्तर पर लाखों उपयोगकर्ता संचार, मनोरंजन और सूचना के लिए उन पर निर्भर हैं। हालाँकि, इन प्लेटफार्मों के बढ़ते उपयोग ने गलत सूचना, साइबरबुलिंग और

गोपनीयता उल्लंघन जैसे मुद्दों को जन्म दिया है, जिससे व्यक्तियों और समाज पर काफी प्रभाव पड़ रहा है। इस साहित्य समीक्षा में, हम आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों के माध्यम से समाज पर इन व्यवहारों के प्रभावों पर मौजूदा शोध पर चर्चा करते हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर गलत सूचना: वर्चुअल मनोरंजन प्लेटफॉर्म पर गलत सूचना से निपटना एक बड़ी चुनौती है, जो व्यक्तियों को नुकसान पहुंचा सकती है और सार्वजनिक संस्थानों में विश्वास को कम कर सकती है। लेज़र एट अल द्वारा अनुसंधान। (2018) से पता चलता है कि ट्विटर पर वास्तविक कहानियों की तुलना में झूठी रिपोर्टों को रीट्वीट किए जाने की अधिक संभावना है, जो गलत सूचना के संभावित प्रभाव पर जोर देती है। इसी तरह, वोसोफी एट अल। (2018) में पाया गया कि ट्विटर पर तथ्यात्मक कहानियों की तुलना में भ्रामक रिपोर्टें अधिक तेजी से फैलती हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर साइबरबुलिंग: वर्चुअल मनोरंजन प्लेटफ़ॉर्म पर साइबरबुलिंग एक प्रचलित मुद्दा है, जो बड़ी संख्या में किशोरों को प्रभावित कर रहा है, जैसा कि कोवाल्स्की एट अल द्वारा उजागर किया गया है। (2014)। साइबरबुलिंग के प्रभाव में मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव शामिल हैं, जैसे अवसाद, चिंता और यहां तक कि आत्मघाती विचार भी। प्लेटफ़ॉर्म ने साइबरबुलिंग को संबोधित करने के लिए विभिन्न रणनीतियों को लागू किया है, जिसमें हानिकारक सामग्री को पहचानने और हटाने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग, उपयोगकर्ताओं के लिए रिपोर्टिंग तंत्र और ऑनलाइन सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए नीतियों और उपकरणों को अपनाना शामिल है। हालाँकि, इन दृष्टिकोणों की प्रभावशीलता बहस का विषय बनी हुई है।

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर गोपनीयता का उल्लंघन: गोपनीयता का उल्लंघन तब होता है जब किसी व्यक्ति की जानकारी या सहमति के बिना व्यक्तिगत जानकारी साझा की जाती है। वर्चुअल मनोरंजन प्लेटफ़ॉर्म लक्षित विज्ञापन और सामग्री वैयक्तिकरण जैसे उद्देश्यों के लिए स्थान, रुचियों और ब्राउज़िंग इतिहास सहित व्यापक उपयोगकर्ता डेटा एकत्र करते हैं। हालाँकि, इस डेटा का अनधिकृत साझाकरण उपयोगकर्ता की गोपनीयता के लिए महत्वपूर्ण जोखिम पैदा करता है। कैम्ब्रिज एनालिटिका घोटाले जैसी उल्लेखनीय घटनाएं इन प्लेटफार्मों पर गोपनीयता उल्लंघन से जुड़े खतरों को रेखांकित करती हैं।

समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव: समाज पर आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों का प्रभाव एक बढ़ती चिंता का विषय है। हालाँकि इन प्लेटफार्मों में हाशिए पर मौजूद समूहों को आवाज देकर सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन को सुविधाजनक बनाने की क्षमता है, लेकिन उनका नकारात्मक प्रभाव जटिल और विविध है। टुफेकी और विल्सन (2012) ने अरब स्प्रिंग विरोध प्रदर्शन के दौरान सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की भूमिका का वर्णन किया, जिसमें व्यापक सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन में उनके योगदान पर जोर दिया गया।

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर फर्जी खबरें: आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर फर्जी खबरों का प्रसार एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बन गया है। पाठकों को धोखा देने के लिए जानबूझकर गढ़ी गई फर्जी खबरें ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से तेजी से फैलती हैं, जिससे व्यक्तियों, राजनीति और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर गंभीर परिणाम होते हैं। टैंडोक जूनियर और अन्य जैसे विद्वान। (2018), तर्क देते हैं कि सोशल मीडिया प्लेटफार्मों द्वारा नियोजित एल्गोरिदम और बिजनेस मॉडल सनसनीखेज और गलत सामग्री को बढ़ावा देने में योगदान करते हैं। इन प्लेटफार्मों पर विनियमन और निगरानी की कमी के कारण फर्जी खबरों को पनपने का मौका मिलता है।

फेक न्यूज के प्रभाव को संबोधित करना: शोधकर्ता समाज पर फेक न्यूज के प्रभाव का मुकाबला करने के लिए विभिन्न समाधान प्रस्तावित करते हैं। एक सुझाया गया दृष्टिकोण व्यक्तियों को फर्जी खबरों की पहचान करने और उनसे बचने के बारे में शिक्षित करना, आलोचनात्मक सोच और मीडिया साक्षरता कौशल को बढ़ावा देना है। एक अन्य समाधान में सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर तथ्य-जांच और सत्यापन प्रक्रियाओं को लागू करना, फर्जी खबरों का पता लगाने और चिह्नित करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना, इसके व्यापक प्रसार को रोकना शामिल है (पेनीकूक और रैंड, 2019; वूली और हॉवर्ड, 2016)।

गलत सूचना, साइबरबुलिंग और गोपनीयता उल्लंघन से निपटने के लिए मीडिया साक्षरता का महत्व

मीडिया साक्षरता, जैसा कि हॉब्स (2018) ने रेखांकित किया है, डिजिटल शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और जैसे-जैसे मीडिया की खपत डिजिटल प्लेटफार्मों की ओर बढ़ रही है, यह तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही है। मीडिया साक्षरता में विभिन्न रूपों में मीडिया सामग्री तक पहुंचने, विश्लेषण, मूल्यांकन और निर्माण करने की क्षमता शामिल है। यह साहित्य समीक्षा मीडिया साक्षरता के महत्व, व्यक्तियों और समाज पर इसके प्रभाव और मीडिया शिक्षा को बढ़ावा देने की रणनीतियों की पड़ताल करती है।

लिविंगस्टोन और थर्ड (2017) इस बात पर जोर देते हैं कि डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध जानकारी की विशाल मात्रा को नेविगेट करने और समझने के लिए व्यक्तियों के लिए मीडिया साक्षरता आवश्यक है। शोध से पता चलता है कि मीडिया साक्षरता लोगों को मीडिया सामग्री का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने, पूर्वाग्रह की पहचान करने और उनके द्वारा उपभोग की जाने वाली जानकारी के बारे में सूचित राय बनाने में मदद करती है। फर्जी खबरों और गलत सूचनाओं के युग में, मीडिया साक्षरता विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है, जो व्यक्तियों को गलत सूचनाओं से सही जानकारी पहचानने में सशक्त बनाती है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मनोरंजन से गलत सूचना फैलती है:

वेब-आधारित मनोरंजन प्लेटफ़ॉर्म दुनिया भर में कई लोगों के लिए मनोरंजन, समाचार और जानकारी का सर्वव्यापी स्रोत बन गए हैं। हालाँकि, इन प्लेटफार्मों पर जानकारी की आसान पहुंच और तेजी से साझाकरण उन्हें गलत सूचना के लिए उपजाऊ आधार बनाता है। गलत सूचना से तात्पर्य महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिणामों के साथ जानबूझकर या अनजाने में वितरित की गई झूठी या भ्रामक जानकारी से है।

कई अध्ययनों ने आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर मनोरंजन और गलत सूचना के बीच संबंध का पता लगाया है। पश्मीना एट अल. (2021) ने गलत सूचना के प्रसार पर मनोरंजन के प्रभाव की जांच की। अध्ययन में पाया गया कि मनोरंजन-संबंधी सामग्री ने गलत सूचना के प्रसार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया, आभासी मनोरंजन उपयोगकर्ताओं द्वारा अन्य प्रकार की सूचनाओं की तुलना में ऐसी सामग्री के साथ जुड़ने और साझा करने की अधिक संभावना है।

सरमाइज़ एट अल द्वारा एक और अध्ययन। (2019) ने 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के दौरान गलत सूचना के प्रसार में मनोरंजन की भूमिका की जांच की। शोध से पता चला कि मनोरंजन से संबंधित समाचार और सूचनाओं का अधिक उपभोग करने वाले आभासी मनोरंजन उपयोगकर्ता पारंपरिक समाचार स्रोतों पर भरोसा करने वालों की तुलना में नकली रिपोर्टों पर विश्वास करने और साझा करने के लिए अधिक प्रवृत्त थे। अध्ययन में फर्जी रिपोर्टों, विशेषकर सनसनीखेज शीर्षकों वाली रिपोर्टों को बढ़ावा देने और फैलाने में सोशल मीडिया एल्गोरिदम की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया।

शोध से यह भी पता चला है कि आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर मनोरंजन-संबंधी सामग्री को अक्सर शैक्षिक या सूचनात्मक सामग्री की तुलना में अधिक जुड़ाव दर प्राप्त होती है। किम और ली (2020) ने पाया कि आभासी मनोरंजन उपयोगकर्ता मनोरंजन मूल्य प्रदान करने वाली सामग्री, जैसे मीम्स और वायरल वीडियो, के साथ अधिक बातचीत करते हैं, भले ही सामग्री के भीतर की जानकारी गलत या भ्रामक हो।

कदाचार और गोपनीयता उल्लंघन के प्रतिकूल प्रभाव:

आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर कदाचार और गोपनीयता उल्लंघनों का व्यक्तियों और समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वितक एट अल. (2016) बताता है कि गोपनीयता का उल्लंघन तब होता है जब व्यक्तिगत जानकारी किसी व्यक्ति की जानकारी या सहमति के बिना साझा की जाती है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्तियों और उनके गोपनीयता अधिकारों को महत्वपूर्ण नुकसान होता है। गलत सूचना का प्रसार और साइबरबुलिंग जैसी कदाचारियां, व्यक्तियों और समग्र रूप से समाज पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती हैं।

आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर कदाचार के प्रतिकूल प्रभावों का एक उदाहरण कोरोनोवायरस महामारी के दौरान गलत सूचना का प्रसार है। वांग एट अल. (2020) ध्यान दें कि वायरस और इसके उपचार के बारे में भ्रामक जानकारी के प्रसार से सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयासों में भ्रम और अविश्वास पैदा हुआ है, जिससे संक्रमण के प्रसार को नियंत्रित करने के प्रयासों में बाधा उत्पन्न हुई है। लार्सन एट अल. (2013) ने आगे जांच की और प्रदर्शित किया कि आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर गलत सूचना से स्वास्थ्य पर नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं, जैसे कि टीका लगाने में झिझक।

2. अनुसंधान पद्धति:

अनुसंधान पद्धति एक शोधकर्ता द्वारा विशिष्ट ऑन-फील्ड या ऑफ-फील्ड अनुसंधान के विषय के आधार पर व्यापक प्राथमिक या माध्यमिक अनुसंधान करने के लिए अपनाई गई विभिन्न विधियों को संदर्भित करती है। इस शोध प्रक्रिया में विभिन्न उपकरण, डेटा संग्रह विधियां, उत्तरदाताओं की संख्या और शोध उद्देश्य शामिल हैं। प्राथमिक डेटा एक संभावित या मानकीकृत प्रश्नावली के साथ किए गए सर्वेक्षण के माध्यम से एकत्र किया गया था, जिसमें उत्तरदाताओं से सीधे प्रश्न पूछकर प्रत्यक्ष जानकारी एकत्र करना शामिल था।

प्राथमिक अनुसंधान खोजपूर्ण और वर्णनात्मक विश्लेषणों का उपयोग करके किया गया था, जिसमें बाद की परीक्षा के लिए अनुभव और परिचितता प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया गया था या जब मुद्दे प्रारंभिक मूल्यांकन स्तर पर थे। मीडिया रिपोर्टिंग और संघर्ष रिपोर्टिंग के प्रभावों और वैधता की पूरी समझ हासिल करने के लिए एक सर्वेक्षण विकसित किया गया था। उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया इस पर उनके दृष्टिकोण का स्पष्ट विचार प्रदान करती है। सुविधा नमूने का उपयोग करके सर्वेक्षण ऑनलाइन आयोजित किया गया था, और उत्तरदाताओं को ईमेल, ऑनलाइन मैसेजिंग और व्हाट्सएप के माध्यम से एक लिंक भेजा गया था।

इस शोध पत्र का उद्देश्य समाज पर आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर कदाचार के प्रभाव का विश्लेषण करना है, गलत सूचना, साइबरबुलिंग और गोपनीयता उल्लंघनों को कम करने में आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों की भूमिका की जांच करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित शोध दृष्टिकोण अपनाया जाएगा:

अनुसंधान डिजाइन: इस अध्ययन के लिए अनुसंधान डिजाइन एक मिश्रित-पद्धति वाला दृष्टिकोण होगा, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा संग्रह और विश्लेषण दोनों तरीके शामिल होंगे। यह दृष्टिकोण अनुसंधान समस्या की व्यापक समझ और आभासी मनोरंजन मंच उपयोगकर्ताओं के अनुभवों और दृष्टिकोणों की गहन खोज की अनुमति देता है।

प्रतिभागियों की संख्या: इस अध्ययन के लिए डेटा संग्रह प्रक्रिया में 50 व्यक्तियों से प्रतिक्रियाएँ एकत्र करने के लिए Google फ़ॉर्म सर्वेक्षण का उपयोग शामिल था।

डेटा संग्रहण:

इस शोध के लिए, डेटा संग्रह की प्राथमिक विधि में ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों पर उपयोगकर्ताओं के नमूने को वितरित एक ऑनलाइन सर्वेक्षण आयोजित करना शामिल होगा। सर्वेक्षण में क्लोज-एंडेड और ओपन-एंडेड दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल होंगे, अनुभव किए गए कदाचार के प्रकार, उपयोगकर्ताओं पर दुर्व्यवहार के प्रभाव और ऐसे मुद्दों को संबोधित करने में आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों द्वारा लागू किए गए उपायों की प्रभावशीलता जैसे विषयों की खोज की जाएगी। इसके अतिरिक्त, उन प्रतिभागियों के एक छोटे उपसमूह के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए जाएंगे, जिन्होंने ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों पर दुर्व्यवहार का सामना किया है। इन साक्षात्कारों का उद्देश्य प्रतिभागियों के अनुभवों और दृष्टिकोणों की अधिक गहन खोज की सुविधा प्रदान करना है।

डेटा विश्लेषण:

सर्वेक्षण से एकत्र किए गए मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण प्रतिशत जैसे वर्णनात्मक आंकड़ों का उपयोग करके किया जाएगा, ताकि नमूना विशेषताओं और आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर दुर्व्यवहार की व्यापकता का अवलोकन प्रदान किया जा सके। साक्षात्कार से प्राप्त गुणात्मक डेटा का विषयगत विश्लेषण किया जाएगा, जिसमें जानकारी में आवर्ती विषयों और पैटर्न की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

नैतिक प्रतिपूर्ति:

यह अध्ययन नैतिक मानकों का पालन करेगा, जिसमें सूचित सहमति प्राप्त करना, गोपनीयता सुनिश्चित करना और प्रतिभागियों के डेटा की सुरक्षा करना शामिल है। प्रतिभागियों को अनुसंधान के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त होगी, और उनकी भागीदारी से पहले उनकी सूचित सहमति प्राप्त की जाएगी। प्रतिभागियों की गोपनीयता की रक्षा के लिए एकत्रित डेटा को अज्ञात रखा जाएगा और सुरक्षित भंडारण उपाय लागू किए जाएंगे।

डेटा संग्रह और व्याख्या:

क्या आपने कभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साइबरबुलिंग देखी है या इसके शिकार हुए हैं?

• हाँ: 45%

• नहीं: 55%

इस सर्वेक्षण का उद्देश्य आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर साइबरबुलिंग की व्यापकता का आकलन करना था, विशेष रूप से इस घटना के पर्यवेक्षक या पीड़ित के रूप में व्यक्तियों के अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करना। प्रारंभिक सर्वेक्षण प्रश्न के परिणामों से पता चला कि 45% उत्तरदाताओं ने ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों पर साइबरबुलिंग का सामना करने या देखने की सूचना दी, जबकि 55% ने ऐसा कोई अनुभव नहीं होने का संकेत दिया।

क्या आपको लगता है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने साइबरबुलिंग को कम करने के लिए पर्याप्त काम किया है?

• हाँ: 25%

• नहीं: 75%

सर्वेक्षण प्रश्न के निष्कर्ष, "क्या आपको लगता है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने साइबरबुलिंग को कम करने के लिए पर्याप्त काम किया है?" संकेत दिया कि अधिकांश उत्तरदाताओं (75%) का मानना है कि ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों ने साइबरबुलिंग को कम करने के लिए पर्याप्त उपाय नहीं किए हैं। इसके विपरीत, 25% उत्तरदाताओं ने राय व्यक्त की कि आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों ने इस मुद्दे को पर्याप्त रूप से संबोधित किया है। इन प्लेटफार्मों के प्रयासों के बावजूद, अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना है कि साइबरबुलिंग से निपटने के लिए और अधिक कार्रवाई की आवश्यकता है।

क्या आपने कभी फेसबुक, इंस्टाग्राम या ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर गलत सूचना साझा की है या उस पर विश्वास किया है?

• हाँ: 70.8%

• नहीं: 29.2%

यह खोज कि 70.8% उत्तरदाताओं ने ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों पर गलत सूचना साझा करने या उस पर विश्वास करने की बात स्वीकार की, चिंता पैदा करती है। इससे पता चलता है कि उपयोगकर्ताओं का एक बड़ा हिस्सा गलत जानकारी के प्रति संवेदनशील है, जिसके व्यक्तिगत निर्णय लेने, सार्वजनिक चर्चा और यहां तक कि सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयासों पर संभावित गंभीर परिणाम हो सकते हैं। हालाँकि, यह निष्कर्ष कि 29.2% उत्तरदाता गलत सूचना फैलाने या उस पर विश्वास करने में संलग्न नहीं थे, शैक्षिक प्रयासों के माध्यम से शमन की संभावना को इंगित करता है।

आप सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा की गई जानकारी की विश्वसनीयता को कैसे सत्यापित करते हैं?

• मुख्यधारा के मीडिया प्लेटफार्मों से: 70.8%

• सहकर्मियों, मित्रों और परिवार के साथ चर्चा करें: 25%

• मैं सत्यापित नहीं करता: 4.2%

इस अन्वेषण के परिणामों से पता चला कि अधिकांश उत्तरदाता (70.8%) साझा जानकारी की विश्वसनीयता को सत्यापित करने के लिए मुख्यधारा के आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर भरोसा करते हैं। तथ्य-जांच के लिए एक ही मंच पर निर्भरता गलत सूचना के संभावित प्रसार के बारे में चिंता पैदा करती है। एक छोटे प्रतिशत (4.2%) ने स्वीकार किया कि वह जानकारी का बिल्कुल भी सत्यापन नहीं करता है। इसके अतिरिक्त, 25% उत्तरदाताओं ने सूचना सत्यापन में पारस्परिक संचार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, इसकी विश्वसनीयता की पुष्टि करने के लिए सहकर्मियों, मित्रों और परिवार के साथ जानकारी पर चर्चा की।

क्या आप जानते हैं कि आप अपनी खबरों की विश्वसनीयता की जांच कर सकते हैं?

• हाँ: 75%

• नहीं: 25%

निष्कर्षों से पता चलता है कि प्रतिभागियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा (75%) अपनी खबरों की विश्वसनीयता की जांच करने की क्षमता के बारे में जानते हैं। यह जागरूकता इंगित करती है कि बड़ी संख्या में लोग अपने द्वारा उपभोग की जाने वाली जानकारी को सत्यापित करने की आवश्यकता को समझते हैं, खासकर ऐसे युग में जहां आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर फर्जी खबरें प्रचलित हैं। हालाँकि, इस प्रश्न का उत्तर "नहीं" देने वाले 25% प्रतिभागियों का सुझाव है कि अभी भी आबादी का एक बड़ा हिस्सा है जिसमें समाचार स्रोतों को सत्यापित करने के महत्व के बारे में जागरूकता या ज्ञान की कमी हो सकती है। यह निष्कर्ष आम जनता के बीच मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए अतिरिक्त शिक्षा और जागरूकता अभियान की आवश्यकता पर जोर देता है।

क्या आपको लगता है कि गलत सूचना फैलाने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए?

• हाँ: 91.7%

• नहीं: 8.3%

इस सर्वेक्षण में प्रतिभागियों की राय जानने की कोशिश की गई कि क्या गलत सूचना के प्रसार के लिए ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। परिणामों से पता चला कि उत्तरदाताओं के भारी बहुमत (91.7%) का मानना है कि आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों को गलत सूचना के प्रसार के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। इसके विपरीत, केवल 8.3% प्रतिभागी इस दृष्टिकोण से असहमत थे।

निष्कर्ष में, सर्वेक्षण के निष्कर्ष आभासी मनोरंजन प्लेटफार्मों पर साइबरबुलिंग और गलत सूचना के प्रसार जैसे दुर्व्यवहारों की व्यापकता पर प्रकाश डालते हैं। अधिकांश प्रतिभागियों ने इन मुद्दों को संबोधित करने में प्लेटफार्मों के प्रयासों के बारे में चिंता व्यक्त की, और अधिक मजबूत उपायों की आवश्यकता का संकेत दिया। इसके अतिरिक्त, डेटा ने ऑनलाइन वातावरण में मीडिया साक्षरता और सूचना सत्यापन के महत्व पर प्रकाश डाला।

3. निष्कर्ष

अंत में, इस शोध पत्र का उद्देश्य गलत सूचना, साइबरबुलिंग और गोपनीयता उल्लंघनों को कम करने में इन प्लेटफार्मों की भूमिका पर ध्यान देने के साथ ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों के माध्यम से समाज पर दुर्व्यवहार के प्रभाव की जांच करना है। अध्ययन में भारत में ऑनलाइन मनोरंजन मंच उपयोगकर्ताओं से अंतर्दृष्टि इकट्ठा करने के लिए सर्वेक्षण और साक्षात्कार सहित मिश्रित तरीकों का दृष्टिकोण अपनाया गया।

निष्कर्षों ने ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों पर गलत सूचना, साइबरबुलिंग और गोपनीयता उल्लंघनों के प्रसार और प्रभाव के संबंध में महत्वपूर्ण चिंताओं को उजागर किया। गलत सूचना, जो अक्सर मनोरंजक सामग्री से संबंधित होती है, तेजी से फैलती हुई पाई गई, जिससे उपयोगकर्ता की सहभागिता प्रभावित हुई। साइबरबुलिंग एक बड़ा मुद्दा बनकर उभरा, जिसने उत्तरदाताओं के एक बड़े हिस्से के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित किया। गोपनीयता का उल्लंघन एक उल्लेखनीय चिंता का विषय था, उपयोगकर्ताओं ने अपनी व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के बारे में चिंता व्यक्त की थी।

शोध ने इन मुद्दों के समाधान में मीडिया साक्षरता के महत्व को रेखांकित किया। मीडिया साक्षरता, जिसे मीडिया सामग्री तक पहुंचने, विश्लेषण, मूल्यांकन और निर्माण करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है, को डिजिटल शिक्षा के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में पहचाना गया था। जानकारी का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता गलत सूचना से निपटने और सूचित निर्णय लेने में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है।

इसके अलावा, अध्ययन से पता चला कि बड़ी संख्या में उपयोगकर्ता सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा की गई जानकारी की विश्वसनीयता की पुष्टि करने के बारे में अनजान या अनिश्चित थे। इसने ऑनलाइन मनोरंजन मंच उपयोगकर्ताओं के बीच मीडिया साक्षरता, आलोचनात्मक सोच और तथ्य-जांच कौशल को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा और जागरूकता अभियान की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

सूचित सहमति, गोपनीयता और डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए अनुसंधान के नैतिक विचारों को प्राथमिकता दी गई। प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं ने उनके अनुभवों और दृष्टिकोणों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की, जिससे निकाले गए निष्कर्षों का आधार बना।

कुल मिलाकर, अध्ययन से पता चलता है कि ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफार्मों को इन मुद्दों के समाधान के लिए अधिक सक्रिय उपाय करने चाहिए। जिम्मेदार प्लेटफ़ॉर्म उपयोग को बढ़ावा देने और उपयोगकर्ता की भलाई की सुरक्षा के लिए सख्त नीतियों, तथ्य-जांच तंत्र में निवेश में वृद्धि और शैक्षिक

पहल की सिफारिश की जाती है। इन चुनौतियों का समाधान करके, ऑनलाइन मनोरंजन प्लेटफ़ॉर्म एक स्वस्थ ऑनलाइन वातावरण में योगदान दे सकते हैं और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

संदर्भ

अब्बास, क्यू., अब्बास, आर., अब्बास, एफ., रज़ा, जेड., और रज़ा, एस. (2018)। साइबरबुलिंग: साहित्य की समीक्षा। मानव व्यवहार में कंप्यूटर, 85, 1-8.

आहूजा, के., बाला, आई. (2021)। अगली पीढ़ी की शिक्षा प्रणाली में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और IoT की भूमिका। इन: अल-तुर्जमैन, एफ., नैय्यर, ए., देवी, ए., शुक्ला, पी.के. (संस्करण) इंटेलिजेंस ऑफ थिंग्स: एआई-आईओटी आधारित क्रिटिकल-एप्लिकेशन और इनोवेशन। स्प्रिंगर, चाम. https://doi.org/10.1007/978-3-030-82800-4_8

ऑलकॉट, एच., और जेंट्ज़को, एम. (2017)। 2016 के चुनाव में सोशल मीडिया और फर्जी खबरें। जर्नल ऑफ इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव्स, 31(2), 211-236।

अनीता, के. (2021)। सोशल मीडिया डेटा विश्लेषण: रफ सेट थ्योरी आधारित इनोवेटिव दृष्टिकोण। इन: अल-तुर्जमैन, एफ., नैय्यर, ए., देवी, ए., शुक्ला, पी.के. (संस्करण) इंटेलिजेंस ऑफ थिंग्स: एआई-आईओटी आधारित क्रिटिकल-एप्लिकेशन और इनोवेशन। स्प्रिंगर, चाम। https://doi.org/10.1007/978-3-030-82800-4_9

एंटोनुची, एल. (2020)। डेटा विज्ञान और सामाजिक अनुसंधान पर तीसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन।

अशफाक, आर. (2021)। 5जी सक्षम प्रौद्योगिकियों का अध्ययन और विश्लेषण, उनकी व्यवहार्यता और इंटरनेट ऑफ थिंग्स का विकास। इन: अल-तुर्जमैन, एफ., नैय्यर, ए., देवी, ए., शुक्ला, पी.के. (संस्करण) इंटेलिजेंस ऑफ थिंग्स: एआई-आईओटी आधारित क्रिटिकल-एप्लिकेशन और इनोवेशन। स्प्रिंगर, चाम. https://doi.org/10.1007/978-3-030-82800-4_5

अशफाक, आर. (2023)। जाति व्यवस्था और भारतीय मीडिया: जटिल संबंध। जर्नल ऑफ मीडिया, कल्चर एंड कम्युनिकेशन (जेएमसीसी) आईएसएसएन: 2799-1245, 3(02), 1-6।

अशफाक, आर., और नबी, जेड. (2022)। मीडिया साक्षरता और सीखना: मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में वैचारिक योगदान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंस्ट्रक्शनल टेक्नोलॉजी एंड एजुकेशनल स्टडीज, 3(4), 1-11। doi: 10.21608/ihites.2021.107738.1082

बर्नाल-ट्रिविनो, ए. (2018)। फेसबुक और कैम्ब्रिज एनालिटिका: एक नई गोपनीयता जागृति का संकेत। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लॉ एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 26(3), 231-240।

ब्राइट, जे. (2018)। बच्चों, किशोरों और परिवारों पर सोशल मीडिया का प्रभाव। बाल चिकित्सा, 141 (पूरक 2), एस96-एस101।

बर्नैप, पी., विलियम्स, एम.एल., स्लोअन, एल., राणा, ओ., हाउसली, डब्ल्यू., एडवर्ड्स, ए., ... और मॉर्गन, जे. (2015)। आतंक पर ट्वीट करना: वूलविच आतंकवादी हमले पर सोशल मीडिया प्रतिक्रिया की मॉडलिंग करना। सामाजिक विज्ञान कंप्यूटर समीक्षा, 33(3), 356-370।

चेन, जी.एम. (2018)। सोशल मीडिया, सामाजिक पूंजी, और कनाडा में अप्रवासी। जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल माइग्रेशन एंड इंटीग्रेशन, 19(1), 109-129।

धीर, ए., योसाटोर्न, वाई., कौर, पी., चेन, एस., और नीमिनेन, एम. (2018)। सोशल मीडिया उपयोगकर्ता गलत सूचना क्यों साझा करते हैं? सत्य के बाद की घटना के अनुपालन का गुणात्मक अध्ययन। सूचना प्रसंस्करण एवं प्रबंधन, 56(6), 1424-1443।

डॉ. रुबैद अशफाक, सुश्री ज़ेबा नबी, और डॉ. रोहित। (2022)। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और भारतीय मीडिया उद्योग: भविष्य अब है। जर्नल ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग एंड न्यूरल नेटवर्क (जेएआईएमएलएनएन) आईएसएसएन: 2799-1172, 2(06), 24-31। https://doi.org/10.55529/jaimlnn.26.24.31

डॉ. रुबैद अशफाक. (2022)। आभासी वास्तविकता में सामाजिक व्यवहार. जर्नल ऑफ सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी (जेएसआरटीएच) आईएसएसएन 2799-1016, 2(05), 12-16। https://doi.org/10.55529/jsrth.25.12.16

डॉ. रुबैद अशफाक. (2023)। जाति व्यवस्था और भारतीय मीडिया: एक जटिल रिश्ता। जर्नल ऑफ मीडिया, कल्चर एंड कम्युनिकेशन (जेएमसीसी) आईएसएसएन:2799-1245, 3(02), 1-6। https://doi.org/10.55529/jmcc.32.1.6

फेल्ट, ए.पी., एगेलमैन, एस., वैगनर, डी., और चिन, ई. (2016)। Facebook में गोपनीयता टूल की प्रभावशीलता. अंतर्राष्ट्रीय वर्ल्ड वाइड वेब सम्मेलन की कार्यवाही, 2016, 803-813।

गर्ग, ए., सिंह, ए.के. (2021)। ग्रीन कंप्यूटिंग में इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) के अनुप्रयोग। इन: अल-तुर्जमैन, एफ., नैय्यर, ए., देवी, ए., शुक्ला, पी.के. (संस्करण) इंटेलिजेंस ऑफ थिंग्स: एआई-आईओटी आधारित क्रिटिकल-एप्लिकेशन और इनोवेशन। स्प्रिंगर, चाम। https://doi.org/10.1007/978-3-030-82800-4_1

गिलानी, एन. (2020). कोविड-19 गलत सूचना और सोशल मीडिया: फेसबुक पर जनता की टिप्पणियों का एक सामग्री विश्लेषण। जर्नल ऑफ़ मीडिया एथिक्स, 35(2), 76-90।

लेज़र, डी.एम.जे., बॉम, एम.ए., बेंकलर, वाई., बेरिंस्की, ए.जे., ग्रीनहिल, के.एम., मेन्ज़र, एफ., ... और ज़िट्रेन, जे.एल. (2018)। फर्जी खबरों का विज्ञान. विज्ञान, 359(6380), 1094-1096।

मिशेल, ए., गॉटफ्राइड, जे., बार्थेल, एम., और शियरर, ई. (2016)। आधुनिक समाचार उपभोक्ता. प्यू रिसर्च सेंटर.

पंग, एन., और चांग, वाई. (2019)। ताइवान में युवा वयस्कों के बीच सोशल मीडिया का उपयोग, सामाजिक पूंजी और राजनीतिक भागीदारी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ कम्युनिकेशन, 13, 1922-1942।

पापाचारिसी, जेड. (2010)। एक नेटवर्कयुक्त स्वयं: सोशल नेटवर्क साइटों पर पहचान, समुदाय और संस्कृति। रूटलेज।

पेनीकूक, जी., और रैंड, डी.जी. (2019)। फर्जी खबरों के झांसे में कौन आता है? ग्रहणशीलता, अतिशयोक्ति, परिचितता और विश्लेषणात्मक सोच की भूमिकाएँ। जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी, 88(2), 185-200।

पेनीकूक, जी., और रैंड, डी.जी. (2021)। ग़लत सूचना का मनोविज्ञान. जनहित में मनोवैज्ञानिक विज्ञान, 22(1), 3-96।

पेरिन, ए., और एंडरसन, एम. (2019)। फेसबुक सहित सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले अमेरिकी वयस्कों की हिस्सेदारी 2018 के बाद से ज्यादातर अपरिवर्तित है। प्यू रिसर्च सेंटर।

प्रेंस्की, एम. (2001)। डिजिटल मूल निवासी, डिजिटल आप्रवासी भाग 1. क्षितिज पर, 9(5), 1-6।

रैप, ए., बीटेल्समैन, एम., और क्रॉस, जे. (2019)। सोशल मीडिया और राजनीति: राजनीतिक संचार और निर्णय लेने पर नए मीडिया का प्रभाव। जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल मार्केटिंग, 18(1), 1-21.

.स्टिग्लिट्ज़, एस., डांग-ज़ुआन, एल., और ब्रून्स, ए. (2017)। सोशल मीडिया एनालिटिक्स. व्यवसाय एवं सूचना प्रणाली इंजीनियरिंग, 59(6), 433-437।

टैंडॉक जूनियर, ई.सी., लिम, जेड.डब्ल्यू., और लिंग, आर. (2018)। "फर्जी समाचार" को परिभाषित करना विद्वानों की परिभाषाओं का एक प्रकार। डिजिटल पत्रकारिता, 6(2), 137-153।

वांग, वाई., मैकी, एम., टोरबिका, ए., और स्टकलर, डी. (2020)। सोशल मीडिया पर स्वास्थ्य संबंधी गलत सूचना के प्रसार पर व्यवस्थित साहित्य समीक्षा। सामाजिक विज्ञान एवं चिकित्सा, 240, 112552।

वेस्ट, आर., और लुईस, जे. (2019)। सत्य, झूठ और गलत सूचना: राजनीतिक बहस में साक्ष्य के उपयोग और दावों की सत्यता की जांच। किंग्स कॉलेज लंदन।

ज़ोलो, एफ., बेसी, ए., डेल विकारियो, एम., स्काला, ए., कैल्डेरेली, जी., शेख्टमैन, एल., ... और क्वात्रोसिओची, डब्ल्यू. (2015)। जनजातियों की दुनिया में पर्दाफाश। प्लस वन, 10(7), ई0131827।